2

हर व्यक्ति विशेष है

(यूहन्ना 4:1-42)

सात वर्षीय एक लड़के ने बच्चों में काम करने वाले एक मनो-चिकित्सक को लिखा:

प्रिय डॉक्टर गार्डनर,

मुझे एक बात बहुत परेशान करती है कि बहुत पहले किसी बड़े व्यक्ति ने, जो 13 साल का लड़का था, मुझे कछुआ कहा और मुझे यह मालूम है कि उसने यह मुझे मेरी प्लास्टिक सर्जरी के कारण ही कहा था।

और मुझे लगता है कि मेरे इन होठों के कारण परमेश्वर मुझसे घृणा करता है। इसलिए जब मैं मरूंगा तो मुझे डर है कि वह मुझे नरक में न भेज दे।

स्नेह, क्रिस[1]

आज बहुत से लोगों में आत्मसम्मान की कमी पाई जाती है। हम इसे ''हीन भावना'' कहते हैं। इसे जो भी नाम दें, इस भावना वाले लोगों को लगता है कि वे किसी काम के नहीं हैं।

हम इस बात पर ज़ोर देना चाहते हैं कि ''हर व्यक्ति विशेष है।'' बाइबल में से हम यूहन्ना 4 अध्याय पर विचार करेंगे। कहते हैं कि यूहन्ना 4 अध्याय में यीशु के स्वभाव के बारे में नये नियम के किसी भी अध्याय से अधिक बताया गया है।

एक अनोखा फैसला (यूहन्ना 4:1-4)

हमारे पाठ का आधार यूहन्ना 3 में मिलता है। यीशु फसह के पर्व में गया हुआ था। पर्व की एक शाम, उसने निकुदेमुस नामक एक प्रसिद्ध यहूदी से बातचीत की। उस बातचीत में से यूहन्ना 3:16 के सुन्दर शब्द मिलते हैं। इस पर्व के बाद, यीशु कुछ समय के लिए यहूदिया में रुक गया और उसे बड़ी सफलता मिली। उसकी सफलता के कारण यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के चेलों में कुछ विवाद हो गया। परन्तु यीशु के लिए उससे भी महत्वपूर्ण बात थी, जो यूहन्ना 4:1 में मिलती है: ''फरीसियों ने सुना कि यीशु यूहन्ना से अधिक चेले बनाता है और उन्हें बपतिस्मा देता है।'' यीशु ने फरीसियों से टकराव को टालना चाहा, जिससे समय से पहले उसकी मृत्यु हो सकती थी। इसलिए उसने यहूदिया से निकलकर गलील के उत्तर की ओर जाने का निर्णय लिया।

अब हम उस अजीब आयत पर आ गए हैं: ''और उसको सामरिया से होकर जाना आवश्यक था'' (आयत 4)। पलिश्तीन एक से दूसरे छोर तक 120 मील (192 किलोमीटर) के लगभग था। 120 मील के अन्दर-अन्दर यह क्षेत्र तीन भागों में बंटा हुआ था। उत्तर की ओर गलील था, दक्षिण की ओर यहूदिया और बीच में सामरिया था। यहूदी लोग आमतौर पर सामरिया में से जाने के बजाय घूम कर जाते थे। वे पूर्व की ओर यरदन नदी पार करके, उत्तर में पिरिया में से होते हुए

गलील की झील तक पहुंचते थे। फिर वे गलील में यरदन नदी पार करते थे। सीधे उत्तर की ओर जाने का तीन दिन का यह सफ़र घुमा-फिरा कर छह से नौ दिन में पूरा होता था। यह न्यू यॉर्क से मैक्सिको नगर में से होकर लॉस एंजिल्स तक जाने जितना होगा।[2]

यीशु को सामरिया में से होकर क्यों जाना *पड़ा?* सुझाव दिया गया है कि यूहन्ना के गिरफ्तार होने के कारण यीशु जल्दी में था,[3] और यीशु नहीं चाहता था कि यूहन्ना के चेले तितर-बितर हो जाएं। पर यह बात कि यीशु सूखार में दो दिन रुका, इस सोच को गलत ठहराती है। मेरा सुझाव है कि उसे इस लिए जाना ''पड़ा'' क्योंकि वह एक विशेष स्त्री तथा बहुमूल्य आत्माओं से भरा नगर था। यानी वहां ऐसे लोग थे, जो आत्मिक कटनी के लिए तैयार थे। उसे जाना ''पड़ा'' क्योंकि परमेश्वर की नज़र में *हर व्यक्ति विशेष है*!

एक पापिन स्त्री (यूहन्ना 4:5-8)

''वह सूखार नामक सामरिया के नगर तक आया, जो उस भूमि के पास है, जिसे याकूब ने अपने पुत्र यूसुफ को दिया था'' (आयत 5)। सूखार उस प्रदेश के बीचों-बीच था ''और याकूब का कुआं भी वहीं था'' (आयत 6)। यह कुआं उन गिने-चुने स्थानों में से एक है, जिन्हें देखकर आप यकीन से कह सकते हैं कि ''यह वही जगह है।'' यह कुआं आज भी वहां, प्राचीन नगर सूखार से आधा किलोमीटर दूर है।

''अत: यीशु मार्ग का थका हुआ, उस कुएं पर यूं ही बैठ गया'' (आयत 6)। यूहन्ना, जिसने सुसमाचार के किसी भी अन्य लेखक से अधिक यीशु के मनुष्य होने की बात कही, लोगों को यह विश्वास दिलाने के लिए कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र है, सुसमाचार का वृत्तांत लिखा है (यूहन्ना 20:30, 31)। यूहन्ना ने यीशु को यह कहते हुए लिखा, ''मैं प्यासा हूं'' (यूहन्ना 19:28)। यीशु को हमारी ही तरह थकावट होती, प्यास लगती, भूख लगती और हमारी तरह ही वह निढाल होता था।

यहूदी समय के अनुसार ''यह बात छठे घण्टे के लगभग हुई'' यह लगभग दोपहर का समय था (आयत 6)।[4] आयत 8 में कहा गया है कि ''उसके चेले तो नगर में भोजन मोल लेने को गए थे।'' यीशु ने उन्हें पहले समय के किसी ढाबे या आजकल के फास्ट-फूड सेंटर पर खाना लाने के लिए भेजा होगा।[5]

''एक सामरी स्त्री जल भरने आई'' (आयत 7)। यह थोड़े से शब्द उस स्त्री के बारे में बहुत कुछ कह देते हैं। स्त्रियां आम तौर पर दोपहर के समय पानी भरने नहीं जाती थीं। पानी भरने वे दिन के ठण्डे समय यानी सुबह-सुबह या दिन ढलने पर शाम को जाती थीं। पानी लेने जाना एक सामाजिक घटना या सामुदायिक रूप में होता था। स्त्रियां एक-दूसरे से मिलकर हाल-चाल पूछ लेती थीं। पर यह स्त्री दोपहर में कड़कती धूप में आई थी। पुरातत्वविदों को सूखार के पास चश्मे भी मिले हैं। यह स्त्री पानी भरने के लिए आधा मील के लगभग चल कर आई थी। इन सब से लगता है कि वह स्त्रियों में से निकाली हुई होगी। यह ढंग उसने लोगों की नज़रों तथा तानों से बचने के लिए अपनाया होगा।

चकित करने वाली विनती (4:7, 9)

''यीशु ने उससे कहा, मुझे पानी पिला ... उस सामरी स्त्री ने उससे कहा, तू यहूदी होकर मुझ सामरी स्त्री से पानी क्यों मांगता है ?'' (आयतें 7, 9)।

इस वार्तालाप को समझने के लिए यहूदियों और सामरियों के बारे में कुछ जानकारी होना आवश्यक है। हमने जाति-पाति की बुराइयों को देखा है कि किसी भी तरह का जाति का भेदभाव परमेश्वर को दुख पहुंचाता है-पर यहूदियों और सामरियों वाली घृणा हमने शायद ही कहीं देखी हो।[6] वह नफरत बहुत पुरानी थी। सामरी लोग एक मिश्रित जाति थे, जो 727 ई.पू. में अश्शूरियों से दस उत्तरी गोत्रों को दासता में ले जाने के समय अस्तित्व में आई थी।[7] उत्तर में रह जाने वाले यहूदियों ने अन्यजातियों के साथ जिन्हें अश्शूरियों ने उत्तरी पलिश्तीन में भेजा था, विवाह-शादियां कर ली थीं।[8] उनसे पैदा हुई सन्तान को सामरी कहा जाने लगा। यहूदियों की नज़र में जातीय शुद्धता को खत्म करना ''क्षमा न किया जाने वाला पाप'' था। आज भी कट्टर यहूदी परिवारों में, यदि कोई यहूदी बच्चा किसी गैर-यहूदी से शादी कर लेता है तो परिवार के लोग उसका जनाज़ा कर देते हैं, क्योंकि वह उनकी नज़र में जीते जी मर जाता है।

इस स्त्री के साथ यीशु की बातचीत से कम से कम तीन हैरान करने वाली बातों का पता चलता है। (1) जैसा कि हमने अभी देखा है, यीशु ने एक सामरी से पानी मांगा था (2) वह एक *स्त्री* थी। यहूदी पुरुष घर से बाहर स्त्रियों के साथ किसी भी प्रकार की बातचीत नहीं करते थे (देखें आयत 27)। यहूदी रब्बी तो घर से बाहर अपनी पत्नी या बेटी से भी बात नहीं करते थे। फरीसियों में एक गुट था, जिसे ''लताड़ा और लहू-लुहान'' कहा जाता था, क्योंकि वे जब भी किसी स्त्री को देखते थे तो अपनी आंखें बन्द कर लेते थे-और किसी दीवार, पेड़ या किसी ऐसी ही जगह की ओर भागते थे (3)। जैसा कि हम देखेंगे कि यह महिला स्त्री होने के साथ-साथ आपत्तिजनक चरित्र वाली स्त्री थी।

अध्याय 3 तथा 4 में यीशु से मिलने वाले लोगों में जान-बूझ कर फर्क दिखाया गया लगता है: अध्याय 3 में यीशु की मुलाकात नीकुदेमुस से हुई जो (1) एक यहूदी, (2) एक पुरुष, (3) ऊंचे नैतिक मापदण्ड वाला एक धार्मिक व्यक्ति था। यहून्ना 4 में कुएं पर यीशु की मुलाकात एक स्त्री से हुई जो (1) सामरी, (2) एक स्त्री और, (3) गिरे हुए चरित्र वाली थी। यीशु ने उस स्त्री से भी आदर, प्रेम और स्नेह से बात की जैसे उसने नीकुदेमुस से की थी। क्यों ? *क्योंकि हर व्यक्ति विशेष है।*

आप आस्तिक हों या नास्तिक, पुरुष हों या स्त्री, सदाचारी हों या दुराचारी; संसार में आप का बहुत बड़ा स्थान हो या अपने आप को ''छोटा'' समझने वाले, परमेश्वर आपको प्यार करता है। आप उसके स्वरूप पर बनाए गए हैं (उत्पत्ति 1:26)। आप परमेश्वर के विशेष लोग हैं। यीशु तुम्हारे लिए ही क्रूस पर मरा और अगर उसे सिर्फ आप के लिए मरना पड़ता तौ भी वह मरता!

यूहन्ना ने यीशु और उस स्त्री के बीच कुएं पर हुई बातचीत के वृत्तांत की व्याख्या भी जोड़ दी है: ''(क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ किसी प्रकार का व्यवहार नहीं रखते।)'' (आयत 9)। इसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं है कि यहूदी लोग सामरियों के साथ किसी भी तरह का लेन-देन नहीं रखते थे। उनके आपस में आर्थिक सम्बन्ध अवश्य थे (वरना चेले खाने का सामान सामरिया नगर में लेने क्यों जाते)। यूहन्ना तो इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि उनका आपस में कोई सामाजिक

लेन-देन नहीं होता था। न्यू इंग्लिश बाइबल (NEB) में एक बदला हुआ अनुवाद दिया गया है, ''यहूदी और सामरी ... एक-दूसरे के बर्तन इस्तेमाल नहीं करते।'' यहूदी लोग सामरियों के बर्तनों में खाते-पीते नहीं थे क्योंकि वे उन्हें भ्रष्ट समझते थे। परन्तु जब यीशु ने उस स्त्री से पानी मांगा तो वह अपने मटके में से देने को तैयार थी। यीशु अपने लोगों के नियम के विरुद्ध क्यों काम कर रहा था? क्योंकि वह स्त्री उसकी नज़र में विशेष थी। क्योंकि परमेश्वर के लिए *हर व्यक्ति विशेष* है।

एक चौंकाने वाली बात (यूहन्ना 4:10-15)

''यीशु ने उत्तर दिया, यदि तू परमेश्वर के वरदान [यीशु स्वयं संसार को परमेश्वर का दान है, यूहन्ना 3:16] को जानती और यह भी जानती कि वह कौन है जो तुझ से कहता है, मुझे पानी पिला तो तू उससे मांगती और वह तुझे जीवन का जल देता'' (आयत 10)। यहूदी लोग कुएं के एक जगह इकट्ठे हुए पानी के बजाय, बहते हुए सोते को ''अमृत जल'' मानते थे। परन्तु इससे भी बड़ी बात, नबियों ने ''अमृत जल'' परमेश्वर की सामर्थ और उपस्थिति को बताया था, जिससे मनुष्य की आत्मिक प्यास बुझती है।[9] इस प्रकार यीशु ने आत्मिक आवश्यकता, अर्थात आत्मिक जीवन की शक्ति के बारे में बताया।

दूसरों की तरह यीशु के इस छात्र को भी समझ नहीं आया कि उसके कहने का क्या अर्थ है।

> स्त्री ने उससे कहा, हे प्रभु तेरे पास जल भरने को तो कुछ है भी नहीं, और कुआं गहरा है [उस समय यह 100 से 150 फुट गहरा था[10]]; तो फिर यह जीवन का जल तेरे पास कैसे आया? क्या तू हमारे पिता याकूब से बड़ा है जिसने हमें यह कुआं दिया और आप ही अपनी सन्तान और पशुओं समेत इसमें से पीया? (आयतें 11, 12)।

यीशु और उसके सुनने वालों के लिए यह कोई नई बात नहीं थी। वह सांकेतिक भाषा में कुछ न कुछ चौंकाने वाली बात कह देता, जिसका उसके सुनने वाले गलत अर्थ निकाल लेते थे। जिस कारण यीशु को उन्हें उस बात का *आत्मिक* अर्थ समझाना पड़ता था।

''यीशु ने उसको उत्तर दिया, जो कोई यह जल (यानी इस कुएं का पानी) पीएगा वह फिर प्यासा होगा'' (आयत 13)। इस जीवन में ऐसा ही होता है। हम पानी पीते हैं और हमें फिर से प्यास लग जाती है। हम खाना खाते हैं और हमें फिर भूख लग जाती है। हम खुश होते हैं, पर खुशी के पल बीत जाते हैं और हम फिर खुशी ढूंढ़ते हैं। इस जीवन में सफलता हो या प्रसिद्धि या आनन्द, सब कुछ बीत जाता है।

यीशु ने आगे कहा, ''परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगा; वरन जो जल मैं उसे दूंगा, वह उसमें एक सोता बन जाएगा, जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहेगा'' (आयत 14)। यीशु मसीह जीवन में सामर्थ, आनन्द और शक्ति मिलने की बात कर रहा था। या यूं कहें कि वह कह रहा था कि ''मैं वे सारी बातें ला रहा हूं जिनके बारे में भविष्यवक्ताओं ने कहा था कि मसीह लाएगा। तुम्हें भरपूरी का जीवन मिल सकता है!''

उस स्त्री को यह बात बहुत अजीब लगी पर उसे अभी भी कुछ समझ नहीं आया था कि यीशु

किसकी बात कर रहा था। ''स्त्री ने उससे कहा, हे प्रभु, वह जल मुझे दे ताकि मैं प्यासी न होऊं और न जल भरने के लिए इतनी दूर आऊं'' (आयत 15) या यूं कहें कि उसने कहा, ''बहुत अच्छा! चिलचिलाती धूप में आधा मील से अधिक चल कर पानी लेने के लिए आने की क्या आवश्यकता है। मैं मटका उठा-उठा कर थक गई हूं!''

एक गंभीर प्रश्न (यूहन्ना 4:16-18)

उस स्त्री का ध्यान अपनी ओर लगा लेने के बाद यीशु अब उसके लिए दिल का ऑपरेशन कर सकता था। यीशु कमज़ोर दिल वाला डॉक्टर नहीं था। ''यीशु ने उससे कहा, जा अपने पति को यहां बुला ला'' (आयत 16)। मसीह के पास आने से पहले आवश्यक है कि ईमानदारी से अपने अन्दर झांक कर ... परमेश्वर के वचन के आइने के सामने खड़े होकर देखें कि हम कैसे हैं। यीशु इस स्त्री से यही करवाना चाह रहा था।

स्त्री ने उत्तर दिया, ''मैं बिना पति की हूं'' (आयत 17)। बातचीत में अभी तक यह स्त्री हर प्रश्न का उत्तर बे-झिझक दे रही थी। वह बोलने में तेज और बड़बोली थी। अब उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या बोले-हिन्दी में पांच शब्द ही हैं (यूनानी में केवल तीन हैं)। हम उसके माथे पर आए पसीने की कल्पना कर सकते हैं।

''यीशु ने उससे कहा, तू ठीक कहती है, मैं बिना पति की हूं। क्योंकि तू पांच पति कर चुकी है और जिसके पास तू अब है वह भी तेरा पति नहीं। यह तू ने सच ही कहा है (यानी, तू ने सच बोला है)!'' (आयतें 17, 18)।

यीशु के रू-ब-रू होना शुरू में घबराहट पैदा करने वाला हो सकता है। इस घटना के थोड़ी देर बाद यीशु गलील की ओर कफ़रनहूम को चला गया। पतरस मछलियां पकड़ने चला गया। लूका 5 अध्याय में आश्चर्यकर्म से मछलियां पकड़ने की कहानी मिलती है। पतरस काफी समय से यीशु के साथ रह रहा था। फिर भी पहली बार उसने यीशु की महिमा और सामर्थ देखी और अपने आप को उस महिमा की रोशनी में पाया। वह पुकार उठा, ''हे प्रभु मेरे पास से जा, क्योंकि मैं पापी मनुष्य हूं!'' (आयत 8)।

कइयों का कहना है कि सुसमाचार के संदेश में हीनभावना का कोई हाथ नहीं है। परमेश्वर नहीं चाहता कि हम जीवन भर अपने आप को दोषी मानते रहें, परन्तु यह बात नहीं है। पर परमेश्वर के अनुग्रह और कृपा के लिए धन्यवाद अपनी आत्मिक आवश्यकताओं की समझ से ही आरम्भ होता है।

याद रखें कि यीशु को अच्छी तरह मालूम था कि वह स्त्री कौन है और कैसी है। बाद में यीशु ने एक पापिन स्त्री को अपने आप को अभिषेक करने की अनुमति दी। और उसके विरोधियों को लगा कि उसे यह पता नहीं है कि यह स्त्री कैसी है।[11] यीशु को स्त्री के बारे में पता था कि वह कैसी है, वैसे ही जैसे उसे सामरी स्त्री के बारे में पता था। फिर भी वह उसके लिए विशेष थी। जब यीशु हमारे मनों और हमारे जीवनों को देखता है तो न वह केवल बुराइयों, समस्याओं और संघर्षों को ही, बल्कि भलाई, सम्भावना को भी देखता है कि हम परमेश्वर की सहायता से क्या बन सकते हैं। यहां उसने एक स्त्री को देखा जो पूरे नगर को विश्वास के मार्ग पर ला सकती थी। यीशु के लिए हर *व्यक्ति विशेष है*!

एक महत्वपूर्ण चर्चा (यूहन्ना 4:19-26)

यीशु द्वारा इस स्त्री की आत्मिक आवश्यकताओं को सपष्ट बता देने के बाद उसकी प्रतिक्रिया क्या थी? स्पष्ट है कि उसने विषय ही बदल दिया (आयत 19)![12] (क्या आपने किसी के साथ बाइबल अध्ययन करते हुए यह पाया है कि उसकी आत्मिक आवश्यकताओं की बात आते ही उसने विषय बदल दिया हो?)

''स्त्री ने उससे कहा, हे प्रभु मुझे लगता है कि तू भविष्यवक्ता है'' (आयत 19)। सामरी लोग केवल *तोरेत* (पुराने नियम की प्रथम पांच पुस्तकें) अर्थात उत्पत्ति से लेकर व्यवस्थाविवरण को ही मानते हैं। इन पुस्तकों में भविष्यवक्ताओं के बारे में बहुत कम कहा गया था, परन्तु सामरियों ने यहूदियों से भविष्यवक्ताओं के बारे में सुना था, जिसे वे मानना नहीं चाहते थे। यह स्त्री भविष्यवक्ताओं के विषय में जानती थी और उसे लगा कि यीशु भी उनमें से एक होगा।

इसलिए उसके कहने का अभिप्राय था कि ''हे रब्बी मेरे एक सवाल का जवाब दे।'' ''हमारे बाप-दादों ने इसी पहाड़ पर आराधना की'' (आयत 20)। नहेम्याह द्वारा सामरियों की सहायता लेने से इनकार करने के बाद[13] उन्होंने गिरिज्जीम पहाड़ पर अपना ही मन्दिर बना लिया था। उन्होंने गिरिज्जीम पहाड़ के सम्बन्ध में कई कथा-कहानियां जोड़ लीं; जैसे यही वह स्थान है, जहां अब्राहम इसहाक को बलिदान करने के लिए लाया गया था; इस्राएलियों के प्रतिज्ञा किए हुए देश में जाने से पहले वेदी यहीं पर बनाई गई थी।[14] गिरिज्जीम पहाड़ जो सूखार से अधिक दूर नहीं था, उनके लिए सबसे पवित्र स्थान था। इस स्त्री ने ''इस पहाड़'' कहते हुए अवश्य उधर हाथ किया होगा। ''और तुम यहूदी कहते हो कि वह जगह जहां आराधना करनी चाहिए यरूशलेम में है'' (आयत 20)। उसका प्रश्न था कि दोनों में से ''सही कौन सा है?''

यीशु ने उत्तर दिया कि शीघ्र ही दोनों में से कोई भी सही नहीं होगा, ''हे नारी मेरी बात का विश्वास कर कि वह समय आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर पिता की आराधना करोगे और न यरूशलेम में'' (आयत 21)। मसीह के आने वाले राज्य में स्थान का नहीं, बल्कि लोगों का महत्व होना था। (हज़ार वर्ष के राज्य अर्थात प्रीमिलेनियलिज़्म की शिक्षा है कि यरूशलेम में बलिदान या आराधना दोबारा शुरू होगी। यीशु की बातों से पता चलता है कि सच्चाई के आगे कुछ नहीं हो सकता।)

उसने आगे कहा, ''तुम जिसे नहीं जानते उसकी आराधना करते हो; और हम जिसे जानते हैं उसकी आराधना करते हैं; क्योंकि उद्धार यहूदियों में से है'' (आयत 22)। यीशु ने कहा, ''उद्धार यहूदियों में से है,'' क्योंकि मसीहा यहूदी जाति में से ही आना था। इसके अलावा पतरस और पौलुस जैसे सुसमाचार के आरम्भिक प्रचारक यहूदी ही थे। बाद में पहली सदी के मसीही यहूदियों में से ही बने।

चाहे यीशु को इस स्त्री की चिन्ता भी थी और वह उससे प्रेम भी करता था, फिर भी वह उसे यह कहने से न हिचकिचाया कि उसका चरित्र और शिक्षा दोनों सही नहीं थे। किसी को स्वीकार करने का यह अर्थ बिल्कुल नहीं है कि हम उसके जीवन की गलत बातों को भी स्वीकार कर लें। यदि हमारे किसी मित्र का चाल-चलन या शिक्षा सही नहीं है और हम उसे कुछ नहीं कहते तो हम उससे प्रेम नहीं करते। यह तो प्रेम की कमी है।

फिर यीशु ने कहा, ''परन्तु वह समय आता है वरन अब भी है (राज/कलीसिया की स्थापना

कोई छह महीने बाद होने वाली थी) जिसमें सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिए ऐसे आराधकों को ढूंढ़ता है'' (आयत 23)। आराधना में ''कहां?'' का नहीं बल्कि ''कौन?'' और ''कैसे?'' का महत्व है। ''आत्मा से'' अर्थात हृदय से परमेश्वर की इच्छानुसार। ''सच्चाई से'' अर्थात परमेश्वर की शिक्षा के अनुसार। यूहन्ना 17 अध्याय वाली अपनी प्रार्थना में यीशु ने कहा था, ''तेरा वचन सत्य है'' (यूहन्ना 17:17)।

सच्ची आराधना का सार था, ''परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करने वाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें'' (आयत 24)। इन आयतों से हम आराधना के विषय में काफी कुछ सीख सकते हैं। परन्तु इस पाठ में हमें यीशु और उसके इर्द-गिर्द के लोगों के बीच सम्बन्ध पर विचार करना है।

स्त्री ने उससे कहा, ''मैं जानती हूं कि मसीह जो ख्रिस्त कहलाता है,[15] आने वाला है; जब वह आएगा तो हमें सब बातें बता देगा'' (आयत 25)। मसीह का विचार एक और सच्चाई है जो सामरियों ने यहूदियों से ली थी। ध्यान दें कि उस स्त्री का विश्वास कैसे बढ़ रहा था। पहले उसने यीशु को ''यहूदी'' (आयत 9), फिर ''प्रभु'' (आयत 11, मूल में ''प्रभु'') और फिर ''भविष्यवक्ता'' (आयत 19) कहकर बुलाया। यीशु के बातें करते हुए अब उसने उसे ''ख्रिस्त'' (अर्थात मसीहा) की बात याद दिलाई (आयत 25 और आयत 29 भी देखें)।

यीशु ने उससे कहा, ''मैं जो तुझ से कह रहा हूं वही हूं'' (आयत 26)।[16] मूल में ''मैं ही हूं[17] जो तुझ से बात कर रहा हूं'' है। यीशु कह रहा था ''तू मसीहा को ढूंढ़ रही है? मैं ही हूं! तू उम्मीद, मदद और मन की प्यास बुझाने के लिए जिस की खोज में है? मैं वही हूं!''

एक प्रेरक अन्तराल (यूहन्ना 4:27-38)

चेले भोजन लेकर आ गए।[18] ''इतने में उसके चेले आ गए, और अचम्भा करने लगे कि वह स्त्री से बातें कर रहा है; तौ भी किसी ने न पूछा, तू क्या चाहता है? या किस लिए उससे बातें करता है?'' (आयत 27)।

''तब स्त्री अपना घड़ा छोड़ कर नगर में चली गई'' (आयत 28)। घड़ा छोड़ कर जाने से उसकी उत्सुकता का पता चलता है और यह संकेत मिलता है कि वह वापस अवश्य आएगी।

> नगर में चली गई और लोगों (''पुरुषों को,'' स्त्रियों को नहीं) से कहने लगी, आओ एक मनुष्य को देखो, जिसने सब कुछ जो मैंने किया, मुझे बता दिया। कहीं यही तो मसीह नहीं? अत: वे नगर से निकलकर उसके पास आने लगे (आयतें 28-30)।

सामरियों के कुएं पर पहुंचने तक, यीशु ने इस समय का उपयोग अपने चेलों को सिखाने के लिए किया।

> इस बीच उसके चेलों ने यीशु से यह विनती की ''हे रब्बी, कुछ खा ले।'' परन्तु उसने कहा, मेरे पास खाने के लिए ऐसा भोजन है जिसे तुम नहीं जानते। तब चेलों ने आपस में कहा, क्या कोई उसके लिए खाने को कुछ लाया है? (आयतें 31-33)।

निकुदेमुस को और उस स्त्री को सिखाने की तरह यीशु ने इन चेलों को भी सिखाया। पहले उसने इशारे से समझाया, जिसे उन्होंने गलत समझ कर उसका शाब्दिक अर्थ निकाल लिया; फिर उसने उन्हें उसका आत्मिक अर्थ समझाया। ''यीशु ने उनसे कहा, मेरा भोजन (यानी मेरा आत्मिक भोजन) यह है कि अपने भेजने वाले की इच्छानुसार चलूं और उसका काम पूरा करूं'' (आयत 34)। यीशु के चेलों के लिए अपने गुरु की बात को समझना कितना कठिन था! परन्तु यीशु का ध्यान उनके मन की कठोरता पर नहीं, बल्कि उन पर था। उसने उन्हें समझाते हुए धीरज से काम लिया, क्योंकि *हर व्यक्ति विशेष है*!

फिर यीशु विषय को बदल कर फसल की कटाई की ओर ले गया, जिससे भोजन मिलता है। उसने कटाई की प्रतीक्षा के लिए एक प्रसिद्ध यहूदी कहावत बताई, ''क्या तुम नहीं कहते, कटनी होने में अब भी चार महीने शेष हैं? देखो, मैं तुमसे कहता हूं, अपनी आंखें उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो कि वह कटनी के लिए पक चुके हैं'' (आयत 35)। दूसरे शब्दों में जब तुम बीज बोते हो तो तुम्हें पता होता है कि चार महीने बाद कटाई होगी। तुम सामरियों की यह स्थिति समझ सकते हो, पर यह बीज तो बहुत पहले बोया गया था[19] यानी अब कटनी का समय है। यह कहते हुए कि ''खेत ... कटनी के लिए पक कर पीले हो गए हैं'' यीशु ने नगर की ओर आते हुए सफेद कपड़ों वाले सामरियों की ओर इशारा किया होगा।[20]

भरपूर फसल (यूहन्ना 4:39-42)

कटनी पर यीशु का उपदेश पूरा होने तक यूहन्ना[21] सामरी पहुंच चुके थे।

> उस नगर के बहुत से सामरियों ने उस स्त्री के कहने पर यीशु पर विश्वास किया; क्योंकि उसने यह गवाही दी थी; उसने सब कुछ जो मैंने किया है, मुझे बता दिया। इसलिए जब ये सामरी उसके पास आए तो उससे विनती करके कहने लगे, हमारे यहां रह। अत: वह वहां दो दिन तक रहा (आयतें 39, 40)।

यीशु के लिए चाहे गलील पहुंचना कितना ही आवश्यक था, पर उसने इन दोगले लोगों के साथ दो दिन बिताए क्योंकि उसके लिए *हर व्यक्ति विशेष है*।

''उसके वचन के कारण और बहुत से लोगों ने विश्वास किया'' (आयत 41)। जब उन्होंने यीशु को स्वयं देखा, जब उन्होंने उसकी बातें सुनीं, जब उन्होंने उसके व्यवहार को देखा और जब उन लोगों ने देखा कि वह सब लोगों से कितना प्रेम करता है।

क्या यीशु ने इन तुच्छ लोगों को ''कटनी के लिए तैयार'' कह कर कुछ गलत किया था? अन्तिम आयत पर ध्यान दें, ''और उस स्त्री से कहा, अब हम तेरे कहने ही से विश्वास नहीं करते; क्योंकि हमने आप ही सुन लिया है और जानते हैं कि यही सचमुच जगत का उद्धारकर्त्ता है'' (आयत 42)। कितनी बड़ी बात है, हम ''जानते हैं कि यही सचमुच जगत का उद्धारकर्त्ता है!'' यीशु के सबसे नज़दीकी चेलों अर्थात प्रेरितों को लगता था कि वह यहूदियों का उद्धारकर्त्ता है, परन्तु उन्हें इस बात की तब तक समझ नहीं आई जब तक परमेश्वर ने पतरस को विशेष दर्शन के द्वारा बताया नहीं।[22] दूसरी ओर इन सामरियों ने यीशु को जगत के उद्धारकर्त्ता के रूप में देख लिया।

सारांश

यदि आप ''इस संसार'' में हैं, यदि आप इस पृथ्वी पर विचर रहे हैं तो यीशु आप का उद्धारकर्त्ता है। आप उसके लिए विशेष हैं! वह आप से प्रेम करता है, उसे आपकी परवाह है और वह आपके लिए समय देगा। वह आप के लिए मरा, इसलिए आप को कभी नहीं छोड़ेगा। क्यों? क्योंकि उसके लिए हर व्यकित विशेष है–और वह व्यक्ति आप ही हैं।

टिप्पणियां

[1]जेम्स डाब्सन द्वारा ''हाइड एंड सीक'' संशो. संस्क. (ओल्ड टैपन, न्यू जरसी: फ्लेमिंग एच. रेवल कं., 1979), 58 में दोहराया गया। [2]इस दोहराव को अन्य क्षेत्रों में इस तरह इस्तेमाल किया जा सकता है: पूरा घेरा बनाकर एक जगह से दूसरी जगह जाना। [3]मत्ती 4:12. [4]कई लोगों का विचार है कि यूहन्ना यहां इस समय की रोमी गणना कर रहा था। पर अधिकतर लोगों का मानना है कि उसने यहूदी गणना का इस्तेमाल किया। [5]इलाके की प्रसिद्ध करियाना दुकान या फास्ट फूड वाली दुकानों का नाम लिया जा सकता है। [6]बहुत से लोगों ने इस प्रकार की गहरी घृणा देखी हैं। सुनने वालों को यहूदियों और सामरियों में पाई जाने वाली घृणा को समझाने के लिए ऐसी घृणा का उदाहरण दिया जा सकता है, जिससे वे परिचित हों। [7]2 राजाओं 17:6. [8]2 राजाओं 17:24. [9]देखें भजन संहिता 36:9; यशायाह 35:7; यिर्मयाह 17:13 और इससे मिलती-जुलती आयतें। [10]तब से लोग इसमें पत्थर फैंकते हैं और आज यह 50-60 फुट गहरा है। अब इसे ढक दिया गया है।

[11]तुलना करें लूका 7:39. [12]यह हो सकता है कि उसने विषय न बदला हो। शायद वह पूछ रही थी कि उसे अपने पापों के लिए बलिदान कहां करना चाहिए (आयत 20)। [13]तुलना करें नहेम्याह 4:1-3; 6:1-4. [14]गिरिज्जीम पहाड़ को महिमा देने के लिए उन्होंने पवित्र शास्त्र तथा इतिहास का अपमान किया। [15]''मसीहा'' इब्रानी भाषा का एक शब्द है, जिसका अर्थ है ''अभिषिक्त'' या चुना हुआ। ''ख्रिस्तुस'' इसका एक यूनानी रूप है और इसका अर्थ भी ''अभिषिक्त'' है। [16]यीशु के शत्रु आस-पास मंडरा नहीं रहे थे (जैसा कि वे आमतौर पर करते थे) इसलिए अपनी पहचान के बारे में उसके वाक्य साधारण से अधिक स्पष्ट थे। [17]''मैं हूं'' परमेश्वर होने की घोषणा है (तुलना निर्गमन 3:14); यूहन्ना रचित सुसमाचार में आम तौर पर इस बात पर ज़ोर देने के लिए कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है इसी शब्द का इस्तेमाल किया गया है। [18]अमेरिका में कहा जा सकता है, ''वे बर्गर और फेंच फ्राई लेकर वापस आ गए।'' ऑस्ट्रेलिया में ''मछली और चिप्स लेकर ...'' कहा जा सकता है। [19]आयत 38 देखें: ''दूसरों ने परिश्रम किया।'' हमें विस्तार से जानकारी नहीं है। शायद यीशु मसीहा के विषय में पुराने नियम की शिक्षाओं की बात कर रहा था, जो सामरियों ने सीखी थीं। कुछ लोगों का मानना है कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का कुछ काम सामरियों में हुआ था। [20]सामरियों का ''पक कर पीले'' होने का इस समय उनके द्वारा यीशु को ग्रहण करने से ही नहीं, बल्कि प्रेरितों के काम अध्याय 8 में फिलिपुस के द्वारा कटनी से भी प्रमाणित हुआ।

[21]यूहन्ना 4:36-38. [22] प्ररितों 10:9-16, 34, 35.